



#### 4. जनार्दनस्य पश्चिमः सन्देशः



संस्कृत साहित्य में महाकवि भास अपनी नाट्यरचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा रचित 13 रूपक प्राप्त हैं, जिन्हें 'भासनाटकचक्रम्' के नाम से जाना जाता है। इन 13 रूपकों में से 'दूतघटोत्कचम्' नामक एकांकी रूपक में से प्रस्तुत नाट्यांश लिया गया है।

प्रस्तुत पाठ की कथावस्तु महाभारत पर आधारित है। कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध प्रारम्भ हो चुका है। आज इस युद्ध में अनीति और अन्याय से अभिमन्यु का वध किया गया है। अतः अर्जुन अत्यन्त दुःखी हैं और उन्होंने अभिमन्यु का वध करनेवाले लोगों का वध करने के संकल्प की घोषणा की है। इस करुण परिस्थिति में अभी भी किसी तरह युद्ध रुक जाए, इसलिए श्रीकृष्ण एक प्रयास करना चाहते हैं। अभिमन्यु के वध की करुण घटना से पांडव शोकाकुल हैं। उसे धृतराष्ट्र और दुर्योधन की दृष्टि के सामने रख श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र को समझाने का प्रयास करते हैं। वे घटोत्कच को अपना दूत बनाकर शांति का सन्देश भेजते हैं। परन्तु युद्ध के उन्माद में डूबे हुए दुर्योधन और उनके सहयोगी शकुनि इत्यादि इस शान्ति संदेश को सुनने के लिए तैयार नहीं होते। अन्ततः घटोत्कच श्रीकृष्ण का पश्चिम-अन्तिम संदेश सुनाते हैं।

दूत के रूप में गए हुए घटोत्कच का दुर्योधन और शकुनि के साथ जो रोचक संवाद हुआ है, उससे नाट्यरस की उत्पत्ति होती है। महाकवि भास ने राक्षसी के पुत्र घटोत्कच के पात्र का उपयोग करके प्रेक्षकों के मानस-पटल पर दुर्योधन की राक्षसी-वृत्ति को स्थापित करने का सफल प्रयास किया है। एक तरफ राक्षसी हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच मानवीय आचरण करते हैं और वहीं दूसरी ओर मनुष्य (धृतराष्ट्र) के पुत्र दुर्योधन अमानवीय (राक्षसी) व्यवहार करते हैं। यह उत्तम विरोधाभास महाकवि भास ने अपनी उत्तम नाट्यकला के बल पर स्थापित किया है। दुर्योधन का यह व्यवहार अन्ततः समस्त परिवार के विनाश को आमंत्रित करता है। समाधान का प्रस्ताव न स्वीकार करनेवाला व्यक्ति अपना और अपने परिवार का विनाश स्वयं कर लेता है। यह तथ्य इस रूपक के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

**घटोत्कचः** - (प्रविश्य) अये अयम् अत्रभवान् धृतराष्ट्रः। अनार्यशतस्य उत्पादयिता। (उपसृत्य) पितामह ! अभिवादये घटोत्क.....। (इत्यर्धोक्ते) न न, अयम् अक्रमः। युधिष्ठिरादयश्च मे गुरवो भवन्तमभिवादयन्ति। पश्चात् घटोत्कचोऽहम् अभिवादये।

**धृतराष्ट्रः** - एहि एहि पुत्र !

**घटोत्कचः** - अहो कल्याणः खलु अत्रभवान्। कल्याणानां प्रसूतिं पितामहमाह भगवान् चक्रायुधः।

**धृतराष्ट्रः** - (आसनात् उत्थाय) किमाज्ञापयति भगवान् चक्रायुधः।

**घटोत्कचः** - न न न। आसनस्थेन एव भवता श्रोतव्यो जनार्दनस्य सन्देशः।

**धृतराष्ट्रः** - यदाज्ञापयति भगवान् चक्रायुधः। (उपविशति।)

**घटोत्कचः** - पितामह ! श्रूयताम्। हा वत्स ! अभिमन्यो ! हा वत्स ! कुरुकुलप्रदीप ! हा वत्स ! यदुकुलप्रवाल ! तव जननीं मातुलं मामपि परित्यज्य पितामहं द्रष्टुमाशया स्वर्गमभिगतोऽसि। पितामह ! एकपुत्रविनाशात् अर्जुनस्य तावत् ईदृशी खलु अवस्था, का पुनर्भवतो भविष्यति। ततः क्षिप्रम् इदानीम् आत्मबलाधानं कुरुष्व। यथा ते पुत्रशोकसमुत्थितोऽग्निर्न दहेत्प्राणमयं हविरिति।

**शकुनिः** - यदि स्याद्वाक्यमात्रेण निर्जितेयं वसुन्धरा

वाक्ये वाक्ये यदि भवेत्सर्वक्षत्रवधः कृतः ॥

**घटोत्कचः** - शकुनिरेष व्याहरति। भोः शकुने ! अक्षान् विमुच्य भव बाणयोग्यः।

**दुर्योधनः** - भो भोः प्रकृतिं गतः। वयमपि खलु रौद्राः राक्षसोग्रस्वभावाः।

घटोत्कचः - शान्तम् पापम् शान्तम् पापम् । राक्षसेभ्योऽपि भवन्त एव क्रूरतराः । कुतः -

न तु जतुगृहे सुप्तान् भ्रातृन् दहन्ति निशाचराः  
शिरसि न तथा भ्रातुः पत्नीं स्पृशन्ति निशाचराः ॥

दुर्योधनः - दूतः खलु भवान् प्राप्तो न त्वं युद्धार्थमागतः ।

गृहीत्वा गच्छ सन्देशं न वयं दूतघातकाः ॥

घटोत्कचः - (सरोषम्) किं दूत इति मां प्रधर्षयसि । मा तावत् भो ! न दूतोऽहम् । प्रहरध्वं समाहताः ।  
(सर्वे उत्तिष्ठन्ति ।)

धृतराष्ट्रः - पौत्र ! घटोत्कच ! मर्षयतु भवान् । मद्बचनावगन्ता भव ।



घटोत्कचः - भवतु भवतु । पितामहस्य वचनात् दूतोऽहमस्मि । भो भो राजानः ! श्रूयतां जनार्दनस्य पश्चिमः सन्देशः ।

धर्मं समाचर कुरु स्वजनव्यपेक्षां

यत्काङ्क्षितं मनसि सर्वमिहानुतिष्ठ ।

जात्योपदेश इव पाण्डवरूपधारी

सूर्याशुभिः सममुपैष्यति वः कृतान्तः ॥

टिप्पणी

संज्ञा : ( पुल्लिङ्ग ) घटोत्कचः भीम और हिडिम्बा के पुत्र पितामहः पिता के पिता, बाबा, दादा चक्रायुधः चक्र जिसका हथियार है वह अर्थात् श्रीकृष्ण जनार्दनः दुष्ट लोगों (व्यक्तियों) का नाश करने वाले, श्रीकृष्ण क्रूरतरः अत्यधिक क्रूर, अति निर्दयी निशाचरः रात्रि में विचरण करने वाले, राक्षस दूतघातकः दूत का वध करने वाला, दूत को मार डालने वाला सूर्याशुः सूर्य की किरणें कृतान्तः मृत्यु, यमराज दूतः संदेशवाहक

( स्त्रीलिङ्ग ) वसुधरा पृथ्वी, धरती, धरा प्रकृतिः स्वभाव, आदत अवस्था स्थिति, दशा

जनार्दनस्य पश्चिमः सन्देशः



( नपुंसकलिंग ) स्वर्गम् स्वर्गं जतुगृहम् लाख से बना घर, लाक्षागृह, लाख का घर

**सर्वनाम :** अत्रभवान् (पु.) आप मे (मम् का वैकल्पिक रूप) मेरा, मुझे भवन्तम् (पु.) आपको माम् मुझे भवतः (पु.) आपको इयम् (स्त्री.) यह एषः (पु.) यह भवन्तः (पु.) आप सभी, आप सर्वम् (नपुं.) सभी, सब

**विशेषण :** पश्चिमः ( सन्देशः ) अन्तिम, अन्तिम (संदेश) आसनस्थेन भवता ( धृतराष्ट्रेण ) आसन पर विराजमान (बैठे हुए) ऐसे (आप) श्रीमान (धृतराष्ट्र) द्वारा कुरुकुलप्रदीप ! यदुकुलप्रवाल ! ( अभिमन्यो ! ) कुरु के कुल के दीपक यदुवंश के अंकुर ! (हे अभिमन्यु) ईदृशी ( अवस्था ) ऐसी (स्थिति), ऐसी (दशा) पुत्रशोकसमुत्थितः ( अग्निः ) पुत्र शोक से उत्पन्न (अग्नि), पुत्र शोक से उठी हुई (अग्नि) प्राणमयम् ( हविः ) प्राणों से सम्पन्न, प्राणों से भरी हुई (अग्नि) रौद्राः राक्षसोग्रस्वभावाः ( वयम् ) रौद्र-रूद्ररूप धारण करने वाले, राक्षस के समान उग्र स्वभाव वाले (हम सब) समाहताः एकत्र हुए सुप्तान् ( भ्रातृन् ) सोते हुए ( भाइयों ) को

**अव्यय :** अये अरे ! आश्चर्य बोधक अव्यय (आश्चर्य के साथ किसी को सम्बोधित करने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला अव्यय) पश्चात् बाद (में), उसके बाद खलु सचमुच, निश्चय ही, निस्सन्देह हा हाय, शोक या दुःख को व्यक्त करने वाला अव्यय पुनः फिर ततः उसके बाद इदानीम् अब, इस समय, अभी इति ऐसा (यह अव्यय प्रायः किसी के द्वारा बोले गए, या समझे गए शब्दों को वैसे का वैसा रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।) यदि जो भोः हे, अरे (यह अव्यय किसी को सम्बोधित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है)

**समासः** अनार्यशतस्य (आर्याणाम् शतम् (आर्यशतम्, षष्ठी तत्पुरुष), न आर्यशतम् - अनार्यशतम्, तस्य - नञ् तत्पुरुष)। अर्धोक्ते (अर्धम् उक्तस्य अर्धोक्तम्, तस्य - षष्ठी तत्पुरुष)। युधिष्ठिरादयः (युधिष्ठिरः आदिः येषां ते - बहुव्रीहि)। चक्रायुधः (चक्रम् आयुधं यस्य सः - बहुव्रीहि)। धृतराष्ट्रः (धृतराष्ट्रं येन सः - बहुव्रीहि)। कुरुकुलप्रदीपः (कुरोः कुलम् (कुरुकुलम्, षष्ठी तत्पुरुष), कुरुकुलस्य प्रदीपः - षष्ठी तत्पुरुष)। यदुकुलप्रवालः (यदोः कुलम् (यदुकुलम् (षष्ठी तत्पुरुष), यदुकुलस्य प्रवालः - षष्ठी तत्पुरुष)। एकपुत्रविनाशात् (एकः चासौ पुत्रः (एकपुत्रः, कर्मधारय), एकपुत्रस्य विनाशः, तस्मात् - षष्ठी तत्पुरुष)। आत्मबलाधानम् (आत्मनः बलम् (आत्मबलम्, षष्ठी तत्पुरुष), आत्मबलस्य आधानम् - षष्ठी तत्पुरुष)। पुत्रशोकसमुत्थितः (पुत्रस्य शोकः (पुत्रशोकः, षष्ठी तत्पुरुष), पुत्रशोकेन समुत्थितः - तृतीया तत्पुरुष)। सर्वक्षत्रवधः (सर्वः चासौ क्षत्रः (सर्वक्षत्रः, कर्मधारय), सर्वक्षत्राणाम् वधः - षष्ठी तत्पुरुष)। बाणयोग्यम् (बाणस्य योग्यम् - षष्ठी तत्पुरुष)। राक्षसोग्रस्वभावाः (राक्षसाणाम् इव उग्रः (राक्षसोग्रः, षष्ठी तत्पुरुष), राक्षसोग्रः स्वभावः येषां ते - बहुव्रीहि)। जतुगृहे (जतुनः गृहम्, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। युद्धार्थम् (युद्धेन अर्थः - युद्धार्थः, तम् - तृतीया तत्पुरुष)। दूतघातकाः (दूतस्य घातकः - दूतघातकः, ते - षष्ठी तत्पुरुष)। मद्वचनावगन्ता (मम वचनम् (मद्वचनम्, षष्ठी तत्पुरुष)। मद्वचनस्य अवगन्ता - षष्ठी तत्पुरुष)। जात्योपदेशः (जात्यस्य उपदेशः - षष्ठी तत्पुरुष)। सूर्याशुभिः (सूर्यस्य अंशवः, तैः - षष्ठी तत्पुरुष)।

**कृदन्त :** ( सं.भू.कृ. ) प्रविश्य प्रवेश करके उपसृत्य पास में जाकर उत्थाय उठकर परित्यज्य छोड़कर ( हे. कृ. ) द्रष्टुम् देखने के लिए

**क्रियापद :** प्रथम गण ( परस्मैपद ) उप + विश् ( उपविशति ) बैठना, पास में बैठना दह् ( दहति ) जलाना स्मृश् छठा गण ( परस्मैपद ) ( स्मृशति ) स्पर्श करना प्र + ह् ( प्रहरति ) प्रहार करना, आक्रमण करना वि + आ + ह् ( व्याहरति ) कहना

### विशेष

**1. शब्दार्थ :** अनार्यशतस्य एक सौ अनार्य पुत्रों के उत्पादयिता जन्मदाता, उत्पन्न करने वाला अभिवाद्ये में अभिवादन करता हूँ घटोत्क...। इति अर्धोक्ते घटोत्क... (इतना) आधा (नाम) बोल लेने के उपरान्त अयम् अक्रमः यह क्रम नहीं (है) एहि एहि पुत्र ! आओ पुत्र आओ ! अहो कल्याणः खलु अत्रभवान् अहो आप तो कल्याणरूप हैं प्रसूतिम् जन्मदाता को आह कहते हैं, कह रहे हैं श्रूयताम् सुनिए आसनस्थेन आसन पर बैठे रहकर श्रोतव्यः सुनना

चाहिए हा वत्स ! अभिमन्यो ! हाय ! पुत्र अभिमन्यु अभिगतः असि तुम गए हो एकपुत्रविनाशात् एक पुत्र के विनाश के कारण क्षिप्रम् तुरन्त, त्वरित गति से, फौरन आत्मबलाधानम् कुरुष्व आत्मा में बल का आधान (स्थापना) कर वाक्यमात्रेण केवल कहने मात्र से, सिर्फ बोलने मात्र से सर्वक्षत्रवधः सभी क्षत्रियों का वध बाणयोग्यम् बाण के योग्य, बाण के अनुरूप प्रकृतिं गतः अपने स्वभाव पर गया शान्तं पापम् पाप शान्त हो (संस्कृत नाटकों में, दो पात्रों के संवाद के बीच जब वक्ता द्वारा कही गई किसी बात को सम्मुख पात्र सुनने योग्य न समझता हो, तब उस पात्र की ओर से इस प्रकार के वाक्य का प्रयोग किया जाता है। इस वाक्य को यदि हिन्दी भाषा में अनूदित करना हो तो, 'ऐसा मत बोलो !' ऐसा कहा जा सकता है।) प्रधर्षयसि (तुम मुझे दूत ऐसा कहकर) अपमानित करते हो मा तावत् भोः (यदि ऐसा है, तो रहने दो) ना, ना प्रहरध्वम् प्रहार करो, आक्रमण करो मर्षयतु भवान् आप क्षमा करें, आप माफ कर दें मद्वचनावगन्ता भव मेरे वचनों को समझने वाले बनो, मेरे वचनों को स्वीकार करो कुरु स्वजनव्यपेक्षाम् स्वजनों की (बचाने की) चिन्ता करो काङ्क्षितं मनसि मनोवांछित, मन में इच्छा की हो वह सर्वम् इह अनुतिष्ठ सब यहीं कर लो, उपभोग कर लो जात्योपदेशः इव जन्म के रहस्य का उपदेश (हो उस तरह) जात्य ऊँचाकुल पाण्डवरूपधारी पांडव-अर्जुन का रूप धारण किया उपैष्यति आ जाएँगे वः आप, तुम्हारे

2. सन्धिः युधिष्ठिरादयश्च (युधिष्ठिरादयः च)। गुरवो भवन्तम् (गुरवः भवन्तम्)। घटोत्कचोऽहम् (घटोत्कचः अहम्)। श्रोतव्यो जनार्दनस्य (श्रोतव्यः जनार्दनस्य)। स्वर्गमभिगतोऽसि (स्वर्गम् अभिगतः असि)। पुनर्भवतो भविष्यति (पुनः भवतः भविष्यति)। पुत्रशोकसमुत्थितोऽग्निर्न (पुत्रशोकसमुत्थितः अग्निः न)। हविरिति (हविः इति)। शकुनिरेष व्याहरति (शकुनिः एषः व्याहरति)। राक्षसेभ्योऽपि (राक्षसेभ्यः अपि)। भवन्त एव (भवन्तः एव)। प्राप्तो न (प्राप्तः न)। दूत इति (दूतः इति)। दूतोऽहम् (दूतः अहम्)। जात्योपदेश इव (जात्योपदेशः इव)।

### स्वाध्याय

#### 1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) यदुकुलप्रवालः कः ?

(क) घटोत्कचः (ख) अर्जुनः (ग) अभिमन्युः (घ) दुर्योधनः

(2) अभिमन्युः कस्य पुत्रः आसीत् ?

(क) जनार्दनस्य (ख) धृतराष्ट्रस्य (ग) अर्जुनस्य (घ) शकुनेः

(3) अभिमन्योः मातुलः कः ?

(क) दुर्योधनः (ख) शकुनिः (ग) जनार्दनः (घ) घटोत्कचः

(4) 'शान्तं पापम् शान्तं पापम्।' इति कः वदति ?

(क) घटोत्कचः (ख) धृतराष्ट्रः (ग) शकुनिः (घ) अर्जुनः

(5) 'वयं दूतघातकाः न।' – इदं वाक्यं केन कथितम् ?

(क) दुर्योधनेन (ख) घटोत्कचेन (ग) शकुनिना (घ) धृतराष्ट्रेण



(6) चक्रायुधः कः ?

(क) अभिमन्युः (ख) जनार्दनः (ग) धृतराष्ट्रः (घ) शकुनिः

(7) भवन्तः ..... अपि क्रूरतराः।

(क) राक्षसान् (ख) राक्षसैः (ग) राक्षसेभ्यः (घ) राक्षसेषु

(8) कृतान्तः शब्दस्य कः अर्थः ?

(क) पाण्डवः (ख) सूर्यः (ग) यमराजः (घ) नष्ट पामेलुं

## 2. एकवाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तरत ।

- (1) घटोत्कचः कस्य सन्देशं नयति ?
- (2) अभिमन्युः कं द्रष्टुं स्वर्गम् अभिगतः ?
- (3) कुत्र सुप्तान् भातृन् निशाचराः न दहन्ति ?
- (4) घटोत्कचः कस्य वचनात् दूतः भवति ?

## 3. कृतान्तानां प्रकारं लिखत ।

- |                      |                        |
|----------------------|------------------------|
| (1) श्रोतव्यः। ..... | (2) परित्यज्य। .....   |
| (3) अभिगतः .....     | (4) उपसृत्य। .....     |
| (5) द्रष्टुम्। ..... | (6) काङ्क्षितम्। ..... |

## 4. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

- (1) घटोत्कचोऽहम्। .....
- (2) शकुनिरेषः। .....
- (3) दूतोऽहमस्मि। .....
- (4) दूत इति। .....

## 5. समासप्रकारं लिखत ।

- |                             |                       |
|-----------------------------|-----------------------|
| (1) कुरुकुलप्रदीपः। .....   | (2) चक्रायुधः .....   |
| (3) पुत्रशोकसमुत्थितः ..... | (4) धृतराष्ट्रः ..... |

## 6. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कस्य, केन, कीदृशाः, कम्, किमर्थम्)

- (1) घटोत्कचः पितामहम् अभिवादयति।
- (2) त्वं युद्धार्थं न आगतः।
- (3) वयं दूतघातकाः न।
- (4) जनार्दनस्य पश्चिमः सन्देशः श्रोतव्यः।

7. उदाहरणानुसारं नामरूपस्य परिचयं कारयत ।

	शब्द	लिङ्ग	विभक्ति	वचन
उदाहरणम् - वचनात्	वचन	नपुंसकलिङ्ग	पञ्चमी	एकवचन
(1) अंशुभिः	.....	.....	.....	.....
(2) शकुनेः	.....	.....	.....	.....
(3) आशया	.....	.....	.....	.....
(4) पितामहम्	.....	.....	.....	.....
(5) राक्षसेभ्यः	.....	.....	.....	.....

8. धातुरूपाणां परिचयं कारयत ।

धातुरूपम्	धातु	पद	काल	पुरुष	वचन
गच्छ	गम्	परस्मैपद	आज्ञार्थ	मध्यम	एकवचन
(1) प्रहरध्वम्	.....	.....	.....	.....	.....
(2) दहेत्	.....	.....	.....	.....	.....
(3) भवतु	.....	.....	.....	.....	.....
(4) समाचर	.....	.....	.....	.....	.....

9. कोष्ठगतपदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

- (1) धृतराष्ट्र कौरवों के पिता थे।  
(धृतराष्ट्र कौरव जनक अस्।)
- (2) घटोत्कच जनार्दन का संदेश लाते हैं।  
(घटोत्कच जनार्दन संदेश आ + नी-नय्)
- (3) हम दूत (को मारने वाले) का वध करने वाले नहीं हैं।  
(अस्मद् दूतघातक न।)
- (4) घटोत्कच धृतराष्ट्र को प्रणाम करते हैं।  
(घटोत्कच धृतराष्ट्र प्र + नम्)

10. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

- (1) घटोत्कच शकुनि को क्या सलाह देते हैं ?
- (2) घटोत्कच ने दुर्योधन को राक्षस से भी ज्यादा क्रूर क्यों कहा ?
- (3) अभिमन्यु की मृत्यु पर अर्जुन द्वारा किए गए विलाप का वर्णन कीजिए।

11. मातृभाषायां संक्षिप्तं टिप्पणं लिखत ।

- (1) घटोत्कच का पात्रालेखन
- (2) श्रीकृष्ण का संदेश

प्रवृत्ति

- प्रस्तुत नाट्यांश का वाचिक अभिनय कीजिए।
- भास के रूपकों की उपलब्ध सी.डी. प्राप्त करके देखिए।